अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

तत्त्वज्ञानः (वर्ष 2018)

चतुर्थवर्षः प्रथम प्रश्न पत्र

लघुदण्डक –30

समयः3 घंटा दिनांक–28.08.2018

पूर्णांक–100

प्र01 कोई चार द्वार लिखें– 24

(क) तिर्यच की अवगाहना।

(ख) गति आगति द्वार प्रारंभ करते हुए तीन विकलेन्द्रिय से पहले तक लिखें।

(ग) लेश्या द्वार।

(घ) देवों की स्थिति बतायें।

(ड) सतरहवां योगद्वार– सात नारकी से अंत तक लिखें ।

(च) उपयोग द्वार– उपयोग किसे कहते हैं? सात नारकी भवनपति आदि से प्रारंभ करते हुए अंत तक लिखें।

प्र02 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें। 6

(क) अज्ञान द्वार

(ख) संहनन द्वार– (संहनन के नाम न लिखें।) केवल द्वार लिखें।

(ग) दृष्टि द्वार सात नारकी से प्रारंभ करते हुए अंत तक लिखें।

(घ) तिर्यच की स्थिति में – तिर्यंच पंचेन्द्रिय की स्थिति लिखें।

पांच – ज्ञान 30

प्र03 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 24

(क) अवधिज्ञान व मनः पर्यवज्ञान के अंतर को स्पष्ट करें।

(ख) अवधिज्ञान – अन्तःगत मध्यगत व अनानुगामिक अवधिज्ञान की सम्पूर्ण व्याख्या करें।

(ग) मनःपर्यज्ञान का विषय– क्षेत्रतः व भावतः को व्याख्यायित करें ।

(घ) अवग्रह के प्रकारों का वर्णन करते हुए उसका कालमान बताएं व मल्लक दृष्टान्त का वर्णन करें।

(ड) श्रुत के समुच्चय रूप ये चार प्रकार का वर्णन बनते हुए मति व श्रुतज्ञान के भेद को यंत्र के माध्यम से समझाऐं?

(च) अनक्षर श्रुत किसे कहते हैं अक्षर श्रुत के प्रकारों का वर्णन करते हुए हेतु उपदेश की व्याख्या करें।

प्र04 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) वर्तमान अवधिज्ञानी का विषय क्यों नहीं बनता है?

Scanned by CamScanner

(ख) अपर्यवसित श्रुत अंत रहित क्यों है?
(ग) मनःपर्यव ज्ञान अप्रमत्तके होता है, यहां अप्रमत्त से क्या तात्पर्य हैं?
(घ) सातवीं नरक के जीव उत्कृष्ट? गव्यूत तक जानते देखते हैं। गव्यूत का अर्थ लिखें।
(ड) मतिज्ञान शब्द के स्थान पर दूसरे किस शब्द का भी, प्रयोग होता है?
(च) आनुगमिक अवधिज्ञान किसे कहते हैं?
(छ) मतिज्ञान श्रुतज्ञान दोनों सहचर होने पर भी इनके दो भेदों का हेतु क्या हैं?
(ज) अगमिक श्रुत किसे कहते हें?

गुणस्थान– दिग्दर्शन गीतिका–10

प्र05 कोई दो पद्य भावार्थ सहित लिखें– 8
(क) कषाय नवमां .....देखो रे।
(ख) दोय भेद ..... थायो रे।
(ग) मोह कर्म .....समाधो रे।
(घ) मोह खायक ..... माणे रे।

प्र06 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 2
(क) चार अघात्य कर्मो का बंध कौन कौन से गुणस्थान तक होता है?
(ख) आठो कर्मो का क्षयोपशम निष्पन्न भाव किस–किस गुणस्थान में?
(ग) क्षपक श्रेणी में आरोहण करने वाला जीव क्या प्राप्त करता है?

पूर्व कंठस्थ ज्ञान–30

प्र07 सभी प्रश्नों के उत्तर देने – अनिवार्य हैं–
(क) पच्चीस बोल– भवनपति देवों के अंतिम छह दण्डक अथवा अंतिम छह गुणस्थान। 3
(ख) चतुर्भंगी– पन्द्रहवां अथवा सत्रहवां बोल। 3
(ग) चर्चा– छह से ग्यारह जीव के भेद अथवा छह से ग्यारह योग लिखें। 3
(घ) तत्व चर्चा– विविध विषयों पर छह द्रव्य नौ तत्व अथवा छह द्रव्य पर छह में नौ की चर्चा । 3
(ड) जैन तत्व प्रवेश– भेद द्वार अथवा भाव द्वार में औदायिक भाव लिखें। 3
(च) कर्म प्रकृति– पिंड प्रकृति में से आनुपूर्वी विहायोगति नाम अथवा मोह कर्म की गुणस्थानों में अवस्थिति लिखें– 4
(छ) बावन बोल– संवर के बीस बोल कितने भाव? कितनी आत्मा। अथवा उदय के तैतीस बोलों में कौन– कौन आत्मा? 3
(ज) इक्कीस द्वार– सम्यक मिथ्या दृष्टि अथवा चक्षुदर्शनी कोई एक बोल लिखें। 4
(झ) जैन तत्व प्रवेश– श्रावक चिंतन द्वार अथवा दान–दया अनुकम्पा द्वार में पारमार्थिक दान के तीन भेद लिखें। 4

Scanned by CamScanner